Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com
कृषि कुंभ
E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 12, (मई, 2025)
पृष्ठ संख्या 34–35

गाय और भैंस का न गरमाना (एनेस्ट्रस) – कारण और प्रबंधन

अक्षय शर्मा, पंकज सूद एवं प्रवेश कुमार
डॉ जी सी नेगी पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय
चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर– 176062, भारत।

Email Id: – akshays482@gmail.com

प्रसव के बाद तुरन्त मद चक्र पुनः आरंभ नहीं होता। अधिकांश गायों और भैंसों को प्रसव के 90 दिनों के भीतर पुनः गर्भधारण करवाना चाहिए। लंबे समय तक एनएस्ट्रस अवधि से पशुओं की जीवनकाल उत्पादन क्षमता घट जाती है। प्रसवोत्तर बांझपन के कई कारण हो सकते हैं, जो मुख्यतः प्रबंधन या पोषण की कमी से जुड़े होते हैं।

1. उम्रः प्रजनन योग्य आयु पार कर चुकी गायों में अनुत्सर्ग की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है।

2. नस्लः अलग–अलग नस्लों में अनुत्सर्ग की घटनाओं में भिन्नता होती है, हालांकि यह मुख्यतः प्रबंधन प्रणाली पर निर्भर करती है।

3. ऋतुः ऋतु और पर्यावरण का प्रभाव उन झुंडों में देखा जाता है जिनका प्रसव शरद ऋतु में हुआ और जिन्हें संरक्षित चारा खिलाया गया। चारे की उपलब्धता और पर्यावरणीय तापमान में परिवर्तन तनाव बढ़ाते हैं और परिणामस्वरूप एनेस्ट्रस अवधि बढ़ती है।

4. दूधपानः यदि दूधपान का अभ्यास दीर्घकाल तक किया जाए, तो इससे अंडोत्सर्जन (ओव्यूलेशन) अवरुद्ध हो जाता है, जिससे प्रसवोत्तर अनुत्सर्ग की अवधि लंबी हो जाती है।

5. प्रसवोत्तर पोषणः प्रसव पूर्व और प्रसवोत्तर पोषण प्रसवोत्तर अनुत्सर्ग की अवधि को प्रभावित करता है। कम पोषण स्तर पर पशु प्रजनन की बजाय उत्पादन के लिए पोषक तत्वों का प्राथमिकता से उपयोग करते हैं, जिससे शारीरिक स्थिति में गिरावट आती है और अनुत्सर्ग अवधि बढ़ती है। पोषण स्तर उत्पादन मांग पर निर्भर करता है। अतः संतुलित पोषण गर्भाधान के बाद, गर्भावस्था के अंतिम चरण में और प्रसव के बाद भी आवश्यक है।

6. चयापचय (मेटाबॉलिक) संबंधी विकारः दूध बुखार, चयापचय अम्लता या क्षारीयता जैसी प्रसवकालीन चयापचय (मेटाबॉलिक) संबंधी बीमारियाँ प्रसवोत्तर अनुत्सर्ग की घटनाओं को बढ़ा सकती हैं।

7. असामान्य प्रसवः कठिन प्रसव, अपरा रुकना, प्रसव से पहले या बाद में जननांग का बाहर आना आदि समस्याएँ तनाव और गर्भाशय संक्रमण के कारण प्रसवोत्तर अनुत्सर्ग की अवधि बढ़ा देती हैं।

8. प्रबंधनात्मक प्रक्रियाएँः प्रसवोत्तर अनुत्सर्ग की अवधि पर प्रबंधन का बड़ा प्रभाव होता है। संतुलित पोषण, उचित आवास व्यवस्था, खनिज एवं विटामिन की अनुपूरकता, बाह्य परजीवी

नियंत्रण आदि जैसे पहलुओं का सही प्रबंधन आवश्यक है।

9. गर्भाशय संक्रमण: सामान्य प्रसव के बाद हल्का गर्भाशय संक्रमण 21 दिनों के भीतर साफ हो जाता है, लेकिन यदि पशु कमजोर या बीमार हो तो एंडोमेट्राइटिस या गर्भशाय में मवाद जमा हो सकता है।

10. दूध उत्पादन: अधिक दूध देने वाली गायों की ऊर्जा आवश्यकता अधिक होती है, अतः उनमें लंबे समय तक अनुत्सर्ग की संभावना अधिक होती है।

11. तनाव: चयापचय विकार, उच्च दूध उत्पादन, परिवहन, अत्यधिक तापमान, संभाल, दर्द और लंगड़ापन से संबंधित तनाव प्रसवोत्तर अनुत्सर्ग की अवधि को बढ़ा देता है।

एनेस्ट्रस को कम करने के महत्वपूर्ण प्रबंधन कदम

1. दूध उत्पादन के अनुसार हमेशा संतुलित पोषण प्रदान करें।
2. गर्भाधान के बाद भी संतुलित पोषण आवश्यक है ताकि निषेचन (फर्टिलाइजेशन) और भ्रूणध्भ्रूण वृद्धि सुचारू रहे।
3. गायों को उन्नत गर्भावस्था के दौरान कमजोर नहीं होना चाहिए।
4. यदि प्रसव के एक महीने बाद पशु का वजन घट रहा हो, तो यह नकारात्मक ऊर्जा संतुलन का संकेत है।
5. प्रसव के समय और बाद में होने वाली बीमारियों का सही उपचार करें।
6. हर गाय का प्रसवोत्तर जननांग स्राव जांचना चाहिए और यदि संक्रमण हो तो उसका उपचार करना चाहिए।
7. कठिन प्रसव, अपरा रुकने, दूध बुखार, जननांगों का बाहर आना आदि की घटनाओं पर पूर्ण ठीक होने तक निगरानी रखें।
8. यदि गाय प्रसव के तीन महीने बाद भी न गरमाए, तो उसका डिंबग्रंथि (ओवरी) की स्थिति की जांच करानी चाहिए।
9. नियमित रूप से कृमिनाशन करना चाहिए।
10. बछड़ों का शीघ्र वीनिंग (दूध छुड़ाना) आवश्यक है।
11. यदि गाय का गर्भाधान हुआ हो, तो तीन महीने के भीतर गर्भावस्था की पुष्टि कर लेनी चाहिए ताकि अनुत्सर्ग की संभावना को समाप्त किया जा सके।
12. जो पशु लंबे समय से खराब पोषण पर रखे गए हैं, उनमें उपचार का प्रतिक्रिया समय अधिक हो सकता है।

उपचार

1. पोषण स्तर सुधारने की सलाह दें (हरी चारे की उपलब्धता के अनुसार सांद्र आहार दें)।
2. हमेशा खनिज मिश्रण और नमक की पूरकता की सलाह दें।
3. आंतरिक और बाह्य परजीवियों की जांच कर उपचार करें।
4. फॉस्फोरस और विटामिन ए, डी, इ, सेलेनियम और तांबा, कोबाल्ट जैसे खनिजों की पूरकता कभी–कभी लाभकारी होती है।
5. बार–बार पशु जननांग जांच कराने की सलाह दें।
6. कभी–कभी 5% लुगोल्स आयोडीन से ग्रीवा (सर्विक्स) को टैम्पोन करना सहायक होता है, लेकिन इसे नियमित रूप से नहीं दोहराना चाहिए।
7. हार्मोनल उपचार केवल स्वस्थ पशुओं में ही सफल होता है।